श्री विष्णु चालीसा

॥ दोहा ॥

विष्णु सुनिए विनय सेवक की चितलाय।

कीरत कुछ वर्णन करूं दीजै ज्ञान बताय॥

॥ चालीसा ॥

नमो विष्णु भगवान खरारी।

कष्ट नशावन अखिल बिहारी॥ ॥

प्रबल जगत में शक्ति तुम्हारी।

त्रिभुवन फैल रही उजियारी॥ ॥

सुन्दर रूप मनोहर सूरत।

सरल स्वभाव मोहनी मूरत॥ ॥

तन पर पीताम्बर अति सोहत।

बैजन्ती माला मन मोहत॥ ॥

शंख चक्र कर गदा विराजे।

देखत दैत्य असुर दल भाजे॥ ॥

सत्य धर्म मद लोभ न गाजे।

काम क्रोध मद लोभ न छाजे॥ ॥

सन्तभक्त सज्जन मनरंजन।

दनुज असुर दुष्टन दल गंजन॥ ॥

सुख उपजाय कष्ट सब भंजन।

दोष मिटाय करत जन सज्जन॥ ॥

पाप काट भव सिन्धु उतारण।

कष्ट नाशकर भक्त उबारण ॥ ॥

करत अनेक रूप प्रभु धारण।

केवल आप भक्ति के कारण ॥ ॥

धरणि धेनु बन तुमहिं पुकारा।

तब तुम रूप राम का धारा ॥ ॥

भार उतार असुर दल मारा।

रावण आदिक को संहारा ॥ ॥

आप वाराह रूप बनाया।

हिरण्याक्ष को मार गिराया ॥ ॥

धर मत्स्य तन सिन्धु बनाया।

चौदह रतनन को निकलाया ॥ ॥

अमिलख असुरन द्वन्द मचाया।

रूप मोहनी आप दिखाया॥ ॥

देवन को अमृत पान कराया।

असुरन को छवि से बहलाया॥ ॥

कूर्म रूप धर सिन्धु मझाया।

मन्द्राचल गिरि तुरत उठाया॥ ॥

शंकर का तुम फन्द छुड़ाया।

भस्मासुर को रूप दिखाया॥ ॥

वेदन को जब असुर डुबाया।

कर प्रबन्ध उन्हें ढुढवाया॥ ॥

मोहित बनकर खलहि नचाया।

उसही कर से भस्म कराया॥ ॥

असुर जलन्धर अति बलदाई।

शंकर से उन कीन्ह लड़ाई॥ ॥

हार पार शिव सकल बनाई।

कीन सती से छल खल जाई॥ ॥

सुमिरन कीन तुम्हें शिवरानी।

बतलाई सब विपत कहानी॥ ॥

तब तुम बने मुनीश्वर ज्ञानी।

वृन्दा की सब सुरति भुलानी॥ ॥

देखत तीन दनुज शैतानी।

वृन्दा आय तुम्हें लपटानी ॥ ॥

हो स्पर्श धर्म क्षति मानी।

हना असुर उर शिव शैतानी ॥ ॥

तुमने ध्रुव प्रहलाद उबारे।

हिरणाकुश आदिक खल मारे ॥ ॥

गणिका और अजामिल तारे।

बहुत भक्त भव सिन्धु उतारे ॥ ॥

हरहु सकल संताप हमारे।

कृपा करहु हरि सिरजन हारे ॥ ॥

देखहुं मैं निज दरश तुम्हारे।

दीन बन्धु भक्तन हितकारे ॥ ॥

चाहता आपका सेवक दर्शन।

करहु दया अपनी मधुसूदन॥ ॥

जानूं नहीं योग्य जब पूजन।

होय यज्ञ स्तुति अनुमोदन॥ ॥

शीलदया सन्तोष सुलक्षण।

विदित नहीं व्रतबोध विलक्षण॥ ॥

करहुं आपका किस विधि पूजन।

कुमति विलोक होत दुख भीषण॥ ॥

करहुं प्रणाम कौन विधिसुमिरण।

कौन भांति मैं करहु समर्पण॥ ॥

सुर मुनि करत सदा सेवकाई।

हर्षित रहत परम गति पाई॥ ॥

दीन दुखिन पर सदा सहाई।

निज जन जान लेव अपनाई॥ ॥

पाप दोष संताप नशाओ।

भव बन्धन से मुक्त कराओ॥ ॥

सुत सम्पति दे सुख उपजाओ।

निज चरनन का दास बनाओ॥ ॥

निगम सदा ये विनय सुनावै।

पढ़ै सुनै सो जन सुख पावै॥ ॥

॥ श्री विष्णु चालीसा ॥